

- 11 दृष्टुरोगी तु दृष्टुणः ॥ ४५९ ॥ ४०
- 12 पामनः कचुरस्तुल्यौ ॥ ४६० ॥ ४१
- 13 सातिसारो ऽतिसारकी । ४२
- 14 वातकी वातरोगी स्या- ४३
- 15 श्लेष्मलः श्लेष्मणः कफी ॥ ४६० ॥ ४४
- 16 क्लिन्ननेत्रे चिह्नचुष्टौ पिष्टौ ४५
- 17 ऽथार्शोयुगर्शसः ४६
- 18 मूर्ध्नि मूर्तमूर्धूलौ ४७
- 19 सिध्यलस्तु किलासिनि ॥ ४६१ ॥ ४८
- 20 पित्तं मायुः ४९
- 21 कफः श्लेष्मा बलाशः स्नेहभूः खटः । ५०
- 22 रोगो ह्ना ह्नातङ्को मान्द्यं व्याधिरपाटवम् ॥ ४६२ ॥ ५१
- 23 ग्राम ग्रामय आकल्यमुपतापो गदः समाः ५२
- 24 क्षयः शोषो रात्रयक्ष्मा यक्ष्मा- ५३
- 25 ॥ ४६३ ॥ ५४
- 26 कासस्तु क्षयः ५५
- 27 पामा खसः कच्छूर्विचर्चिका ५६

11. Mit Ausschlag versehen (2 W.). — 12. Aussätzig (2 W.). —  
 13. Mit der Ruhr behaftet (2 W.). — 14. An Rheumatismus leidend  
 (2 W.). — 15. Verschleimt (3 W.). — 16. 1) Triefende Augen.  
 2) Daran leidend (4 W.). — 17. Mit Hämorrhoiden behaftet (2 W.). —  
 18. Ohnmächtig (3 W.). — 19. Mit Blattern behaftet (2 W.). — 20.  
 Galle (2 W.). — 21. Schleim, einer der drei Säfte des Körpers  
 (5 W.). — 22. 23. Krankheit (12 W.). — 24. Schwindsucht (4 W.). —  
 25. Niesen (3 W.). — 26. Husten (2 W.). — 27. Aussatz (4 W.).